दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
फैक्स नं0 : 0551-2334549
: 9792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 02.10.2020

प्रकाशनार्थ

दिनांक 2–10–2020 गोराखपुर। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर में गांधी जयंती के अवसर पर प्रथम सत्र में महाविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों द्वारा गांधी जी एवं लालबहादुर शास्त्री की प्रतिमा पर पुष्पांजलि की गई तत्पश्चात महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ शैलेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा झण्डारोहण किया गया।

द्वितीय सत्र में महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के तत्वाधान में गांधी जयंती के अवसर पर डिजिटल माध्यम से "गांधी का शैक्षिक दर्शन एवं नई शिक्षा नीति 2020 विषय पर बतौर मुख्य वक्ता डॉ दिग्विजय नाथ पांडे एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग एच.आर.पी.जी कॉलेज खलीलाबाद ने कहा कि शिक्षा के बारे में गांधीजी का दृष्टिकोण वस्तुत व्यवसायपरक था। वह बुनियादी शिक्षा तालीम के पक्षधर थे। उनका मानना था कि भारत जैसे निर्धन देश में विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने के साथ–साथ कुछ धन उपार्जन भी कर लेना चाहिए जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। हर नागरिक को अपनी आजीविका शारीरिक श्रम के द्वारा अर्जित करनी चाहिए। उन्होंने बुद्धिजीवियों के लिए भी शारीरिक परिश्रम की शिक्षा दी थी । इस बात को उन्होंने रोटी का परिश्रम नाम दिया था। नई शिक्षा नीति 2020 उन्हीं के विचार दर्शन से प्रभावित आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करती है। उन्होंने आगे कहा कि नई शिक्षा नीति नए भारत, श्रेष्ठ भारत के निर्माण का पथ प्रदर्शन करने वाली है। मनुष्य, समाज एवं संस्कृत केंद्रित ऐसी शिक्षा का विधान करने वाली है जिससे विज्ञान और तकनीकी का समावेश इस प्रकार से होगा कि आधुनिकता और प्राचीनता का द्वंद जो भारत की शिक्षा का अपरिहार्य परिणाम रहा है उससे मुक्ति मिल सके। औपनिवेशिक मानसिकता को दूर कर स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर समाज के निर्माण का आधार बनेगी। देश में पहली बार ऐसी शिक्षा नीति बनी है जो भारत के विकास भारत की सांस्कृतिक परंपरा और भारत के लोगों की समृद्धि को शिक्षा का लक्ष्य मानती है। नई शिक्षा नीति अभी मात्र नीति निर्णय है अगले शैक्षणिक सत्र 2021–22 से इस नीति को लागू करने का निश्चय हुआ है इस नीति को लागू करने की तैयारी हेतु 1 वर्ष में शिक्षा पर सरकार का निवेश किस तरह बढ़ाया जाए, शिक्षा में कारपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी की संभाव्यता किस प्रकार सुनिश्चित की जा सकती है, शिक्षा को लेकर समाज का जागरण कैसे हो, आज सभी विषयों पर कार्य किया जाना अपेक्षित है। महात्मा गांधी ने शिक्षा के संबंध में सभी को समान अवसर उपलब्ध कराने की बात की थी जिसमें सभी

प्राणियों में कौशल का विकास कर कुटूर कुटीर उद्योगों के द्वारा भारत की अपार जनसंख्या को रचनात्मक कार्य में लगाया जा सके। गांधी जी के अनुसार जब तक गांव का विकास नहीं होगा तब तक भारत का विकास नहीं हो सकता है। नई शिक्षा नीति में निहित शिक्षा व्यवस्था की मूल अवधारणा 21वीं सदी की चुनौतियों का समाधान करना है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति की जड़ें प्राचीन सांस्कृतिक परंपरा में है या शिक्षा नीति वर्तमान के वास्तविक धरातल पर अवलंबित है यह भविष्योन्मुखी शिक्षा नीति है, इसमें निरंतरता है और पिछली व्यवस्थाओं को यह खारिज नहीं करती है बल्कि उनका नवीनीकरण करती है। यह एक ऐसा नीतिगत दस्तावेज है जिसने जीडीपी का 6ः भाग शिक्षा पर व्यय किए जाने का प्रस्ताव किया गया है इस शिक्षा नीति में मल्टीपुल एंट्री एवं मल्टीपुल एग्जिट का प्रस्ताव किया गया है जिससे कि विद्यार्थी पर मानसिक दबाव ना हो और वह किसी भी अनुशासन में अपनी रुचि का विषय ले सके। इसमें मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करने की बात की गई है। शिक्षा नीति में प्रतिपादित है कि 6 वर्ष के बजाय 3 वर्ष की आयु से ही शिक्षण एवं संस्कार की प्रक्रिया शुरू हो जानी चाहिए। नई शिक्षा नीति में भारतीयता का तत्व अधिक है जो संस्कार और मूल्यों के संरक्षण में अपना योगदान कर सकती है। लेकिन सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इस शिक्षा नीति को वास्तविक धरातल पर कैसे लाया जाए। इसके लिए प्रशासन, शिक्षक, कर्मचारी तथा सरकार को इच्छाशक्ति दिखानी होगी।

इससे पूर्व कार्यक्रम की संयोजिका डॉ श्रीमती वीणा गोपाल मिश्रा विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर ने कहा कि देश को पूरे 34 वर्षों बाद एक ऐसी शिक्षा नीति मिली है जो मिशन नालंदा एवं मिशन तक्षशिला के लक्ष्यों तक पहुंचने में कारगर हो सकती है। नई शिक्षा नीति महात्मा गांधी के शिक्षा संबंधी विचारों को प्रतिध्वनित करती है। शिक्षा में मातृभाषा की महत्ता रोजगार उन्मुख शिक्षा सर्व सुलभ सार्वभौमिक शिक्षा, शिल्प एवं कौशल का विकास आदि अनेक बिंदुओं पर नजर डालने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि आजादी के बाद पहली बार महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा एवं नई तालीम के आदर्शों को किसी शिक्षा नीति में पूर्ण संकल्प एवं निष्ठा के साथ स्थान दिया गया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.शैलेंद्र प्रताप सिंह ने की तथा आभार ज्ञापन राजनीति विज्ञान विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शैलेश कुमार सिंह के द्वारा किया गया। उक्त कार्यक्रम में विभागीय शिक्षकों डॉ प्रियंका सिंह डॉ अखिल श्रीवास्तव श्री इंद्रेश पांडे सहित महाविद्यालय के अन्य शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की उपस्थिति सराहनीय रही।

डॉ शैलेश कुमार सिंह
प्रभारी सूचना एवं जनसंपर्क